

### इस अंक में...

- 5 | अपने पुरुषार्थ को जगाओ
- 7 | समसामयिकी घटना संग्रह
- 8 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

### 17 | आर्थिक घटना संग्रह

- केन्द्रीय वित्त मंत्री ने लोक सभा में वित्त वर्ष 2014-15 का बजट पेश किया
- केन्द्रीय वित्त मंत्री ने आर्थिक समीक्षा 2013-14 लोक सभा में प्रस्तुत की
- रेलमंत्री डी.वी. सदानंद गौड़ा ने रेल बजट 2014-15 लोक सभा में प्रस्तुत किया

### 24 | राष्ट्रीय घटना संग्रह

- उम्रकैद की सजा प्राप्त कैदियों की रिहाई पर सर्वोच्च न्यायालय ने रोक लगाई
- गरीबी मापन प्रणाली की समीक्षा हेतु गठित विशेषज्ञ समूह ने अपनी रिपोर्ट योजना आयोग को सौंपी

### 27 | अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह



- भारत के उपराष्ट्रपति की पाँच दिवसीय चीन यात्रा
- भारत की विदेशी मंत्री सुषमा स्वराज की बांग्लादेश की तीन दिवसीय राजकीय यात्रा सम्पन्न
- बी20 आस्ट्रेलिया शिखर सम्मेलन सिडनी में आयोजित

### 31 | खेल खिलाड़ी

- 20वें राष्ट्रमंडल खेलों का ग्लासगो में शुभारम्भ
- आस्ट्रेलियाई ओपन सुपर सीरीज-2014
- जर्मनी ने अर्जेंटीना को हराकर फीफा फुटबाल विश्व कप 2014 जीता

### 35 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

- 80 | समसामयिक घटनाएं : जनवरी 2014 से जुलाई 2014 तक
- 86 | प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता
- 88 | तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक 53 का परिणाम
- 90 | रोजगार अवसर

### हल प्रश्न-पत्र

37 हरियाणा अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2014 (स्तर-I : कक्षा I से V तक)

47 आर.आर.सी. (इलाहाबाद) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014

आगामी आईबीपीएस द्वारा आयोजित बैंक क्लर्क सम्मिलित लिखित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

52 तर्कशक्ति परीक्षा

56 English Language

59 आंकिक क्षमता

62 सामान्य ज्ञान

64 कम्प्यूटर ज्ञान

आगामी स्टेट बैंक लिपिकीय संवर्ग लिखित परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

66 तर्कशक्ति परीक्षा

70 English Language

73 सामान्य जागरूकता

75 आंकिक क्षमता

78 विपणन/कम्प्यूटर ज्ञान

● सम्पादक : महेन्द्र जैन

● रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा-2

● सम्पादकीय ऑफिस

1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने  
आगरा-मथुरा बाईपास, आगरा-282 005  
फोन- 4053333, 2531101, 2530966  
फैक्स- (0562) 4053330, 4031570  
ई-मेल: सम्पादकीय: [publisher@pdgroup.in](mailto:publisher@pdgroup.in)  
कस्टोमर केयर: [care@pdgroup.in](mailto:care@pdgroup.in)

● दिल्ली ऑफिस

4845, अंसारी रोड, दरियागंज,  
नई दिल्ली-110 002  
फोन- 011-23251844/66

● हैदराबाद ऑफिस

1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स  
बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद-500 044  
फोन- 040-66753330  
मो- 09391487283

● पटना ऑफिस

पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ  
पटना-800 003  
फोन-0612-2673340  
मो-09334137572

● कोलकाता ऑफिस

28, चौधरी लेन, श्याम बाजार  
कोलकाता- 700 004  
फोन- 033-25551510  
मो- 07439359515

● लखनऊ ऑफिस

B-33, ब्लॉक स्क्वायर, कानपुर  
टैक्सो स्टेण्ड लेन, मवड्या,  
लखनऊ- 226 004  
फोन- 0522-4109080  
मो- 09760181118

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनिकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टेोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सक्सेस मिरर' की नहीं है.

# अपने पुरुषार्थ को जगाओ

जिन्दगी मिला करती है कुछ कर  
गुजरने के लिए.  
मुस्कान मिला करती है, बनकर बिखरने  
के लिए.  
ओढ़कर चादर क्यों पड़ा है, तू उदास.  
जिन्दगी मिलती है, जागकर जीने के  
लिए.

समस्त दर्शनों का सार तत्व यह है कि आत्मा ही परमात्मा है. आत्मा ही अपने परम शुद्ध स्वरूप को यदि जगा ले, तो उससे बढ़कर अन्य कोई सत्ता इस जगत् में नहीं है. यदि कोई व्यक्ति यह सोचता है कि इस जगत् में कोई ऐसी शक्ति है, जो हम सबको नियन्त्रित करती है, हम सबको जीवित रखती है, हम सबके कर्मों का लेखा-जोखा रखती है और समयानुसार हमें उन कर्मों का फल देती है. कभी खुशी, कभी गम देती है, तो समस्त दर्शन ऐसा कहते हैं कि सुख-दुःख व्यक्ति के अपने निजी कर्मों का फल है. ये सभी व्यक्ति के स्वयं के भावों के अनुरूप उसे मिलते हैं. व्यक्ति अपनी भावनाओं से घटनाओं को जिस रूप में देखते हैं, जिस रूप में उन घटनाओं को महसूस करते हैं वह व्यक्ति के स्वयं के स्वभाव और सोच पर निर्भर करता है. इसके लिए कोई अन्य उसे प्रेरित नहीं करता, बाधित नहीं करता. हाँ, व्यक्ति ने पूर्व में जैसे-जैसे भाव प्रसारित कर दिए हैं, उन्हें भोगने के लिए वह बाध्य है और भावों के अनुरूप घटनाएं उसके सामने अवश्य ही उत्पन्न होंगी, अर्थात् व्यक्ति भाव प्रसारित करने में तो स्वतन्त्र है, लेकिन जैसा भाव प्रसारित कर चुका है उन भावों के अनुरूप जो घटनाएं उसके सामने बन करके आ गई हैं. उन्हें भोगने के लिए तो वह परतन्त्र और बाध्य है, किन्तु उन घटनाओं को वह किस रूप में भोगेगा, इसके लिए फिर से स्वतन्त्र है. अर्थात् घटनाएं आ गईं. माना कि आपके जीवन में कोई घाटा लग गया, कोई दुःख की घटना आ गयी, लेकिन आप उस हानिकारक घटना को भी सकारात्मक रूप में ले सकते हैं जैसे आप कह सकते हैं कि ये मेरे लिए चुनौती है. अब मैं कुछ और अच्छे तरीके से काम करूँगा. आप कह सकते हो कि घटना मुझे जगाने के लिए आई है कि पहले अवश्य ही मैंने कुछ गलत भाव प्रसारित किए हैं अथवा अहंकार किया है. आगे से मैं अपने भावों को शुद्ध रखूँगा. हर घटना के साथ हम बहुत कुछ सीख सकते हैं. गलतियों से सीख सकते हैं.

अपने आप के व्यवहार और भावों में परिवर्तन ला सकते हैं और ऐसा भी सम्भव है कि घटना अगर हमारे लिए प्रतिकूल है, तो हम रोएं, पीटें, चीखें, चिल्लाएं अथवा अवसाद में चले जाएं. यह भी हमारा अपना चुनाव होगा अर्थात् हमने जैसा भाव किया वैसी घटना बनी और घटना जब सामने आयी, तो अब हमारे भीतर से भाव तो वैसा निकलेगा ही जैसा घटना बनाते समय था, किन्तु हम इस समय के भावों को बदल भी सकते हैं और इस समय के भावों को बदलने की क्षमता का नाम पुरुषार्थ है. इस पुरुषार्थ को हम सब अपने भीतर जगाएं, ताकि हमारा जीवन सुन्दर और सुखमय बन सके.